News Expert
10h ·

किसानों की आय बढ़ाने में बकरी पालन की भूमिका
कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर सोहन लाल वर्मा ने बताया कि खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं।उन्होंने बताया कि खेती कम होने की दशा में किसानों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन है।गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है।उन्होंने कहा कि बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रखरखाव का खर्च भी कम होता है।डॉक्टर वर्मा ने बताया कि सूखे के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम आसानी से हो जाता है।उन्होंने कहा कि बकरी की उन्नतशील प्रमुख नस्लें जैसे:- जमुनापारी,बरबरी एवं ब्लैक बंगाल प्रमुख है। डॉक्टर वर्मा ने बताया कि डेढ़ वर्ष की अवस्था में बकरी बच्चा देने की स्थिति में आ जाती है। प्रायः एक बकरी एक बार में दो से तीन बच्चे देती है। उन्होंने कहा कि बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं पड़ती है।साथ ही जरूरत पड़ने पर आसानी से बेचकर नगद धन प्राप्त किया जा सकता है। इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध होते हैं अधिकतर व्यवसाई गांव से ही बकरी बकरे खरीद कर ले जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि बकरी व्यवसाय अपनाकर खेती के साथ-2अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

Sign in to edit and save changes to this file.

लोकनायक भारत
सत्यनिष्ठ, उत्कृष्ट
नई दिल्ली संस्करण वर्ष-01, अंक - 63
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
बुधवार, 05 जनवरी 2022 | पृष्ठ 12 | मूल्य 3 रु.
For epaper→ www.loknayakbharat.com

बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं: डॉ सोहन

कानपुर। सीएसए के प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. सोहन लाल वर्मा ने बताया कि खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं।उन्होंने बताया कि खेती कम होने की दशा में किसानों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन है।गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है।उन्होंने कहा कि बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रखरखाव का खर्च भी कम होता है।डॉक्टर वर्मा ने बताया कि सूखे के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम आसानी से हो जाता है।उन्होंने कहा कि बकरी की उन्नतशील प्रमुख नस्लें जैसे जमुनापारी,बरबरी एवं ब्लैक बंगाल प्रमुख है। डॉक्टर वर्मा ने बताया कि डेढ़ वर्ष की अवस्था में बकरी बच्चा देने की स्थिति में आ जाती है। प्रायः एक बकरी एक बार में दो से तीन बच्चे देती है। उन्होंने कहा कि बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं पड़ती है।साथ ही जरूरत पड़ने पर आसानी से बेचकर नगद धन प्राप्त किया जा सकता है। इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध होते हैं अधिकतर व्यवसाई गांव से ही बकरी बकरे खरीद कर ले जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि बकरी व्यवसाय अपनाकर खेती के साथ- साथ अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

Sign in to edit and save changes to this file.

उत्तर प्रदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश
डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कानपुर... 03
सारे महारथी मैदान में पर मायावती अब भी अपनी... 05
जन एक्सप्रेस
लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 84
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper
लखनऊ | बुधवार | 05 जनवरी, 2022

किसान बकरी पालन कर बढ़ा सकते हैं आय: डॉ. सोहन लाल वर्मा

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं। खेती कम होने की दशा में किसानों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन है। गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है। ऐसे में बकरी पालन कर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। यह बातें मंगलवार को सीएसए के वैज्ञानिक डॉ सोहन लाल वर्मा ने कही।
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर सोहन लाल वर्मा ने बताया कि बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रखरखाव का खर्च भी कम होता है। सूखे के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम आसानी से हो जाता है। बकरी की उन्नतशील प्रमुख नस्लें जैसे:- जमुनापारी, बरबरी एवं ब्लैक बंगाल प्रमुख है। डॉक्टर वर्मा ने बताया कि डेढ़ वर्ष की अवस्था में बकरी बच्चा देने की स्थिति में आ जाती है। प्रायः एक बकरी एक बार में दो से तीन बच्चे देती है। उन्होंने कहा कि बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
साथ ही जरूरत पड़ने पर आसानी से बेचकर नगद धन प्राप्त किया जा सकता है। इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध होते हैं अधिकतर व्यवसाई गांव से ही बकरी बकरे खरीद कर ले जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि बकरी व्यवसाय अपनाकर खेती के साथ-साथ अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

आज महानगर

किसानों की आय बढ़ाने में बकरी पालन की महत्वपूर्ण भूमिका

कानपुर, 4 जनवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर सोहन लाल वर्मा ने बताया कि खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं। उन्होंने बताया कि खेती कम होने की दशा में किसानों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन है। गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है।उन्होंने कहा कि बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रखरखाव का खर्च भी कम होता है। डॉ वर्मा ने बताया कि सूखे के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम आसानी से हो जाता है।उन्होंने कहा कि बकरी की उन्नतशील प्रमुख नस्लें जैसे जमुनापारी, बरबरी एवं ब्लैक बंगाल प्रमुख है। डॉ वर्मा ने बताया कि डेढ़ वर्ष की अवस्था में बकरी बच्चा देने की स्थिति में आ जाती है। प्रायः एक बकरी एक बार में दो से तीन बच्चे देती है। उन्होंने कहा कि बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं पड़ती है। साथ ही जरूरत पड़ने पर आसानी से बेचकर नगद धन प्राप्त किया जा सकता है। इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध होते हैं अधिकतर व्यवसाई गांव से ही बकरी बकरे खरीद कर ले जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि बकरी व्यवसाय अपनाकर खेती के साथ-2अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

HINDUSTAN NEWS EXPRESS

होम | कानपुर | कानपुर आस-पास | अपना प्रदेश | राजनीति | देश/विदेश | स्वास्थ्य | खेल | आध्यात्म | मनोरंजन | बिज़नेस

BREAKING NEWS धअवस्था में युवक ने अपने कनपटी गोली मारी।गंभीर हालत में मेडिकल कालेज में भर्ती, मौत। मौत की जानकारी होते ही प

आप यहां है - होम » कानपुर आस-पास » बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं: डॉ सोहन

बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं: डॉ सोहन

Updated: 1/4/2022 10:01:11 PM By Reporter- rajesh kashyap kanpur

Netmeds
Download the Netmeds app
Google Play
इंस्टॉल करें
X ⓘ

बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं: डॉ सोहन

हिंदुस्तान न्यूज़ एक्सप्रेस कानपुर। सीएसए के प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. सोहन लाल वर्मा ने बताया कि खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं।उन्होंने बताया कि खेती कम होने की दशा में किसानों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन है।गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है।उन्होंने कहा कि बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रखरखाव का खर्च भी कम होता है।डॉक्टर वर्मा ने बताया कि सूखे के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम आसानी से हो जाता है।उन्होंने कहा कि बकरी की उन्नतशील प्रमुख नस्लें जैसे जमुनापारी,बरबरी एवं ब्लैक बंगाल प्रमुख है। डॉक्टर वर्मा ने बताया कि डेढ़ वर्ष की अवस्था में बकरी बच्चा देने की स्थिति में आ जाती है। प्रायः एक बकरी एक बार में दो से तीन बच्चे देती है। उन्होंने कहा कि बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं पड़ती है।साथ ही जरूरत पड़ने पर आसानी से बेचकर नगद धन प्राप्त किया जा सकता है। इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध होते हैं अधिकतर व्यवसाई गांव से ही बकरी बकरे खरीद कर ले जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि बकरी व्यवसाय अपनाकर खेती के साथ- साथ अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।